मलिक मुहम्मद जायसी का पद्मावत

डॉ.षीना.वी.के
सह आचार्य
सरकारी ब्रोन्नन कॉलेज तलश्शेरी, धर्मडम.पी.ओ
कन्नूर, केरल Mob: 9744772422

सारांश -इस लेख मे मालिक मुहम्मद जाएसी के जीवनवृत तथा उनके महाकाव्य पद्मावत का संक्षिप्त परिचय दिया हैं तथा पद्मावत के भावपक्ष तथा कलापक्ष की विशेषताओ का परिचय दिया हैं।

बीज वाक्य – मालिक मुहम्मद जायसी तथा उनके कृतित्व पद्मावत का परिचय देना इसका ऊद्देश हैं

मलिक मुहम्मद जायसी का समय 1464–1542 तक है। इनका निवास स्थान जायस नगर था। इन्नके मुख्य ग्रथं है पद्मावत, आखिरीकलाम, और अखरावट, आदि। मलिक मुहम्मद जायसी हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के अन्तर्गत सूफी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि है। निर्गुण भक्ति शाखा के काव्य के दो प्रकार थे। वे है सतंकाव्यधारा और सूफी काव्य धारा।

सूफी काव्य धारा में मलिक मुहम्मद जायसी श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। अन्य सूफी कवियों में प्रमुख है मंझन, कुतुबन, उसमान, शेखनबी, नूर मुहम्मद, कासिम शाह आदि।

जायसी की काव्य प्रतिभा अत्यधिक निराली है। कहा जाता है कि जायसी विरूप था। उन्हें एक आँख तथा एक कान खराब था। वे शेरशाह के दरबार के कवि थे। कहा जाता है कि एक बार शेरशाह ने जायसी की कुरूपता देखकर हँसा था। तब जायसी ने शेरशाह से कहा कि'मोहिका हँसेसि कि कोहरंहि'। अथत् मुझ पर हँसते हो या उस इश्वर पर जिसने मुझे बनाया है। जायसी में अनोखी काव्य प्रतिभा थी। विनम्रता के साथ-साथ अहंभाव भी उनमें थे। सूफी कवि भावात्मक रहस्यवाद के कवि थे। वे आत्मा को पुरुष और परमात्मा को स्त्री मानते थे। जायसी भी भावात्मक रहस्यवाद के कवि थे। उनकी भाषा ठेठ अवधी थी न कि तुलसीदास की तरह संस्कृत निष्ठ अवधी। जायसी ने अपने काव्य में लोकभाषा और लोककथा का आधार लिया था। उनकी वाक्य रचना व्यवस्थित नहीं। सूफी कवियों के बदले कबीर आदि संत कवियों में साधनात्मक रहस्यवाद के तत्व मिलते हैं। जायसी का लोकप्रिय काव्यग्रंथ है पद्मावत जो प्रबन्ध काव्य है। इस काव्य में रत्नसेन, पद्मावती और नागमती की कथा है। भारतीय संस्कृति परंपरा और हिन्दु धर्म आदि का इसमें प्रभाव है। फारसी हिन्दी काव्य परंपरा का भी इसमें प्रभाव है।

इसके 57 अध्याय या खण्ड है। इसमें नागमती वियोग खण्ड महत्वपूर्ण अध्याय है जिसमें नागमती के वियोग वर्णन है। यहाँ 6 ऋतुएं तथा 12 महीने आदि का वर्णन है। इसकी भाषा ठेठ अवधी थी. रत्नसेन की पत्नी थी नागमती और उसका विरह सुन्दर ढंग से चित्रित है। पद्मावत काव्य में फारसी की मसनवी परंपरा का भी प्रभाव है। भारतीय कथानक रूढियों का प्रयोग भी इस काव्य में मिलता है। लौकिक प्रेमाख्यान कविता में अलौकिक प्रेम व्यंजना मिलती है। पद्मावत काव्य की रचना 1540 ई. में हुई थी।

पद्मावत में संयोग वर्णन, और वियोग वर्णन मिलता है। रूपक तत्व की विशेषता भी इसमें मिलती है। पद्मावत में कथानक के दो भाग है जैसे पूर्व कथानक और उत्तर कथानक । पूर्व कथानक में कल्पनातत्व है और उत्तर कथानक में इतिहास तत्व है। अेत: इतिहास और कलपना का सम्मिश्रण इस काव्य में मिलते हैं।

पद्मावत की कथा– रूपकतत्व से युक्त है। चित्तौड शरीर का, रत्नसेन मन का, सिहंल द्वीप ह्यदय का, बुद्धि पद्मावती की, हीरामन तोता गुरु का प्रतीक है। साँसारिक आकर्षण का प्रतीक है नागमती। राघव चेतन और अलाउद्दीन आसुरी वृत्तियों का प्रतीक है। इस काव्य में आद्यात्मिक भावना, और रहस्यवाद के तत्व मिलते हैं। जैसे प्रस्तुत पंक्ति देख सकते हैं। "पिय ह्यदय मंह भटे न होई,को रे मिलाव कहें केहि रोई"।

इसमें प्रेमकी अभिव्यक्ति है। पद्मावत में आत्मा रूपी नायक परमात्मा रूपी प्रिया को देखने केलिए उसकी खोज में निकल पडता है। अत: यहाँ आद्यात्मिक भावना और रहस्यवाद का प्रभाव है। प्रेम मार्गी कवियों में जायसी श्रेष्ठ है। उनकी काव्य प्रतिभा अत्यंत उत्कृष्ट है।

"नयन जो देखा कँवल मा निरमल नीर सरीर, हँसत जो देखा हंस भा दसन जोति नग हीरा।" रूपक तत्व के उदाहरण जायसी की कविता में मिलता है। जैसे "तन चितउर मन राउर कीन्हा हिय सिहंल बुधि पद्मिनी चीन्हा।" पद्मावत की कथा इस प्रकार है। इसमें सिंहल द्वीप के राजा गन्धर्व सेन की कन्या पद्मावती और चित्तौड गढ़के राजा रत्नसेन की प्रेमकथा है। हीरामन तोते से पद्मावती की रूप प्रशंसा सुनकर राजा विरह व्याकुल हो जाता है। और वह रानी नागमती और राज्य छोड़कर योगी बनकर सिंहलद्वीप में चलता है। अनेक विध्नों के बाद शिव की कृपा से वह पद्मावती को प्राप्त करता है। चित्तौडगढ़ लौटने पर वह अपने दरबार के पंडित राघवचेतन से वाद-विवाद में झगडा करके क्रोध् पूर्वक राघव चेतन को देश से निकालता है। राघव चेतन अलाउद्दीन को पद्मावती की रूप प्रशंसा करके चित्तौड गढ़ पर चढाई करने की प्रेरणादेता है। और रत्नसेन को धोखे से कैद करता है। पद्मावती की कुशालता और गोरा बादल की वीरता से रत्नसेन कैद से स्वतंत्र होता है। रत्नसेन लेकिन राजा देवपाल जिसने रत्नसेन की कैद के वक्त पद्मावती को फंसाने का प्रयत्न किया था उससे लड़ते हुए मारा जाता है। अंत में दोनों रिायाँ रत्नसेन की चिता में कूदकर सती हो जाती है। इस प्रकार जायसी के पद्मावत एक श्रेष्ठ प्रबन्धं काव्य है जिसकी अनेक विशेषताएँ होती है। हिन्दु और इस्लामी संस्कृतियों को मिलाने का कार्य जायसी में मिलता है। विरह वर्णन में फारसी साहित्य का इसमें प्रभाव है। भारतीय साहित्य की पद्दति पर बारहमासा, ज्योतिष, कामशास्त्र, आयुर्वेद, शकुन विचार, लोक विश्वास, जादु टोना, तीर्थ, व्रत, लोक व्यवहार, आदि लोक साहित्य और परंपरा के तत्वं जायसी आदि सूफी कवियों के साहित्य में प्राप्त होते हैं सूफी काव्यों में प्रेम के साथ सौन्दर्य का सबंन्ध है। जायसी के काव्यथं पद्मावत में इसके दर्शन मिलते हैं।

निष्कर्ष :-निष्कर्ष में कह सकते हैं कि जायसी के पद्मावत दोहा चौपाई में लिखा हुआ अवधी काएक महाकाव्य है जिसकी लोकप्रियता अनुपम है। जाएसी के साहित्यिक व्यक्तित्व अत्यंत प्राउढ़ हैं। उनका महाकाव्य पद्मावत भी अत्यंत स्तरीय रचना हैं।

****

सन्दर्भग्रन्थ:-
1. जायसी ग्रन्थावली –आचार्य रामचंद्रशुक्ल।